Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 5.69
ISSN No. 2456-1665

सुअरदान धर्म बनाम व्यापारः एक विश्लेषण

डॉ.बिक्कड अभिमन्यु सदाशिवराव
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
राष्ट्रमाता इंदिरा गांधी कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
जालना (महा)
मो.९४२१३०७७०६

साहित्य और समाज का अटुट संबंध है । समाज परिवर्तनशील है । समय-समय पर सामाजिक मुल्यों में बदलाव आ जाता है । हिंदू धर्म में गाय को पवित्र माना जाता है । वे गाय में देवता के दर्शन देखते हैं । तो कुछ धर्म में सुअर को अपवित्र माना जाता है । अंग्रेजों ने फुट डालो और राज करो इस अपने सिद्धांत के चलते गाय और सुअर को सहारा बनाकर हिंदू मुस्लिम में साम्प्रदायिक तनाव फैलाए थे । भीष्म सहानी का 'तमस' उपन्यास उस दौर के साम्प्रदायिक तनाव को प्रस्तुत करता है । प्रेमचंद का 'गोदान' गाय के महत्व को विषद करता है । तो आज के वैज्ञानिक दौर में सुअर का कितना महत्व है । अंतरराष्ट्रीय बाजार में उसके अमूल्य किंमत है । इस कारण धर्म पर व्यापार भारी नजर पडता आ रहा है । इस आधुनिक व्यापार के कारण जातिधर्म के परंपरागत मान्यताओं को लोग नकार रहे है । यही बात रुपनारायण सोनकर अपने उपन्यास 'सुअरदान' में अधोरेखित करते है ।

रुपनारायण सोनकर जी प्रसिद्ध दलित साहित्यकार है । दलित साहित्य की शुरुवात मराठी साहित्य में दलित आत्मकथाओं से हुई । दया पवार, प्र.ई.सोनकांबळे, किशोर शांताबाई काळे, बेबी कांबळे की आत्मकथा विशेष चर्चित रही । इसका प्रभाव इतना हुआ कि भारतीय अन्य भाषाओं में उस प्रदेश के साहित्यिक अपने अनुभव को दर्ज कराने लगे । हिंदी में भी उसकी शुरूवात दमदार हुई । जयप्रकाश कर्दम की 'छप्पर' आत्मकथा हिंदी साहित्य में मिल का पत्थर साबित हुई । इस तरह दलित साहित्य दिन-ब-दिन दलित विमर्श को आगे बढाता हुआ जहाँ उनके अस्तित्व एवं अधिकारों के संघर्ष को देखा जा सकता है । रुपनारायण सोनकर इसी कडी को आगे बढाते हैं । वे अपने साहित्य के माध्यम से दलित शोषित, पीडित, अल्पसंख्याक और दीनहीन समाज के जीवन की विभिन्न पहलूओं को समक्ष रखते है । भारतीय समाज के विभिन्न कुरितीयों, कुप्रथाओं, सामंतवाद, ब्राम्हणवाद, सवर्णों की मानसिकता, उनके षडयंत्र, जातिवाद, धार्मिक पाखंड, अंधविश्वास, सामाजिक विसंगतियों का पर्दाफाश करते हैं । वे स्वतंत्रता, समता,बंधुता और परिवर्तन हेतू निरंतर प्रयासरत रहे है । 'सुअरदान' ऐसा ही एक परिवर्तनवादी उपन्यास है ।

प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु धार्मिक बनाम आर्थिक है । जैसा कि उपन्यास में चार मित्रों के व्यापार के कौशल्य को दिखाया गया है । यह चारों मित्र विदेश से पढकर आये हैं । वे चाहते तो सरकारी नौकरी हासिल कर सकते थे । परंतु उन्होंने ठान ली गाँव में ही ऐसा व्यवसाय करना है जिससे आर्थिक लाभ भी हो, गाँव के लोगों को रोजगार भी उपलब्ध हो और गाँव का नाम भी रोशन हो । इनकी खास विशेषता यह है कि यह चारों भी अलग-अलग जातियों से है । तथा अलग-अलग धर्म में आस्था रखते है । रामचंद्र त्रिवेदी, घसीटे चमार, सज्जन खटिक और सलवंत यादव यह चार मित्र हैं । इनके संदर्भ में उपन्यासकार अपने उपन्यास में इस तरह वक्तव्य करते है, ''रामचन्द्र त्रिवेदी, सज्जन खटिक, घसीटे चमार, और सलवंत यादव विदेशों से उच्च तकनीकि शिक्षा ग्रहण कर अपने गाँव सिंहासन खेड़ा आये थे। रामचन्द्र त्रिवेदी ने एम० बी० ए०, सज्जन खटिक ने बी० टेक०, सलवंत यादव ने बैटरनरी डॉ० की डिग्री ली थी, घसीटे चमार ने बार-एट ला की डिग्री ली। इन सभी दोस्तों ने उच्च तकनीकी व कानूनी शिक्षा ग्रहण की थी। इन चारों को देश-विदेश में अच्छी नौकरियां मिल रहीं थी, लेकिन ये लोग कहीं भी नौकरी नहीं करना चाहते थे। चारो तरफ आतंक का वातावरण फैला हुआ है। चारो तरफ शहरों में मारकाट हो जाती है। सैकडों की संख्या में निर्दोष लोग मारे जाते है। वे लोग कोई ऐसा बिजनेस चाहते है जो अशिक्षित, शिक्षित, बेरोजगारों को नौकरी दे सके विशेषकर ग्रामीण नवयुवकों को। गाँव में एक ऐसा वतावरण बनाना चाहते थे जहाँ प्यार समानता भाईचारा हो। गाँव की गरीबी को वे लोग जड़ से उखाड़ फेंकना चाहते थे। जतिवाद को समूल नष्ट करना चाहते थे। विश्व बन्धुत्व पर यकीन करते थे।''[१]

प्रस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार पूँजीवाद की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं । एक दौर ऐसा था कि जाति के आधार पर मनुष्य को समाज में मान, सम्मान मिलता था । लेकिन आज के तारिख में जिसके पास धन है, हाथ में व्यापार है, नौकरी है । ऐसे लोगों को सम्मानित किया जाता है । धर्म की जगह अब धन ने ले चुकी है। पुरातन समाज में जाति के आधार पर व्यापार किया जाता था । जैसे की चमार है, तो चमडी का व्यापार करते थे, कुम्हार मटके का व्यापार करते थे । दरजी कपडे का व्यापार करते थे । हाजाम केश कर्तन का काम करते थे । लेकिन आज के तारिख में व्यापार और जाति का कुछ खास सलुख नहीं रहा । बहुत सारे केश कर्तनालय के मालिक और उसे चलाने वाले अन्य समाज के लोग है । मारवाडी जैसे लोग चप्पल, बुट का व्यापार कर रहे हैं । यही कारण है कि यह चारो मित्र सुअर का व्यापार करने की सोचते है । जिसमें आर्थिक लाभ की अधिक शाश्वती है । उनकी यह धारणा है , '' किसी दूसरे की उन्नति को देखकर कुढना । उसकी उन्नति के रास्ते में काँटे बिछाना । जाति के आधार पर किसी को हेय समझना । साम, दाम, दण्ड, और भेद से उसको पराजित करना ये ही बुरे संस्कार हैं आज का युग कम्पीटशन का है । आप जरा चूके तो तो अवसर आपके हाथ से निकल जायेगा ।'' [२]

प्रस्तुत उपन्यास में व्यापार किस तरह करना चाहिए । यह चारो मित्र के पिंगरी फार्म को देखकर अनुभव किया जाना चाहिए । यह चारों मित्र फार्म के अलग-अलग काम करते है । कोई मार्केटिंग करता है, तो कोई कानुन का काम देखता है । जैसे की व्यापारीयों के साथ अॅग्रीमेंट कराना , कोई देखभाल करता है तो कोई उसके खाद्य की व्यवस्था करता है । उदाहरण प्रस्तुत है, "पिगरी फार्म के अन्दर सूअरों को खाने के लिए सकरकन्दी कई हेक्टेयर खेंतों में लगाई गई। पानी के लिए ट्यूबेल की व्यवस्था की गई है। खेतों में तालाब बनाए गये। चारों का पिंगरी फार्म आसमान की ऊचाँइयो को छूने लगा। पिंगरी फार्म के अन्दर बहुत अलीशान वातानुकूलित कोठी बनायी गयी। जिसमे नौ कमरे थे। सूअरों की संख्यां छः हजार से उपर पहुँच गयी। चारों आदमियों के काम बटे थे। रमचन्द्र त्रिवेदी मार्केटिगं करता था। देश विदेश के व्यापारियों से सम्पर्क साधता था और सौदा तय करता था।"[३]

एक ओर पिगरी फार्म तरकी कर रहा था तो दूसरी ओर गाँव के लोग अभी भी रूढी, परंपरा, अंधविश्वास, जातिवाद में फंसे हुए थे । चारो मित्र गाँव के लोगों को इन बातों से उभरने के लिए उनका मन बनाने की कोशिश कर रहे थे । बावजूद भी लोग अपने हरकतों से बाज नहीं आ रहे थे । प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित पात्रों याने जो पिगरी फार्म से जुडे हैं , उनके ही सदस्य के रामचंद्र त्रिवेदी के पिता नाराज है । वह खूद को उच्च जाति के समजते थे । वह निचली जाती के लोगों के साथ व्यापार करना उचित नहीं मानते थे । हालाँकि उनका बेटा तरकी कर रहा है । फिर भी वह नहीं समझ पा रहे है। ऐसे व्यक्ति के मनोदशा को लेखक ने प्रकट किया है । आज का युग विज्ञानवादी है । सब काम संगणक के जरिए आधुनिकीकरण के कारण व्यापार में काफी बदलाव आया है । इस तकनीय महता को प्रफुल्ल कोलख्यान इस तरह बयान करते है, "बाजार व्यापार के स्थान और अनिवार्य संसाधन प्रदान करता है। इस अर्थ में बाजार व्यापार का अधार है ।"[४]

उपन्यासकार इन चारों मित्रों के व्यापार के माध्यम से व्यापार तथा अर्थाजन कितना मायने रखता है । यह स्पष्ट करते हैं । उसके सामने धर्म के सिकंजे ढिले हो जाते हैं । "आज के युग में कोई व्यापार करना अधर्म नहीं होता है । मेहनत और इमानदारी से किया हुआ कार्य उसी कस्तुरी को प्राप्त करता जो मृग में रहती है ।"[५]

संक्षेप में उपन्यासकार रुपनारायण सोनकर ने व्यापार के माध्यम से जाति, पाति के अंतरभाव को किस तरह बढावा मिलता है तथा धर्म के चली आ रही परंपरागत रूढी, परम्पराओं से आज के पढे-लिखे नवयुवक किस कदर आगे बढ रहे हैं । अलग-अलग जातियों के होने के बावजूद भी वे वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर अपना व्यापार आगे बढाते हैं और उसमें सफल होते हैं । प्रस्तुत उपन्यास समाज की इस समाज के परिवर्तनशीलता मानक माना जा सकता है ।

संदर्भ :

१.रुपनारायण सोनकर, सुअरदान, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, २०१३ पृ.१४

२.वही, पृ.९८

३.वही, पृ.१५

४.बाजारवाद और जनतंत्र, प्रफुल्ल कोलख्यान,आनंद प्रकाशन, कोलकाता प्रथम संस्करण, २००६, पृ.२१

५.रुपनारायण सोनकर, सुअरदान, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, २०१३ पृ.९८